Jankriti International Magazine
Jankriti International Magazine
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 2.0202
www.jankritipatrika.in
Volume 3, Issue 33, January 2018

जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 2.0202
www.jankritipatrika.in
वर्ष ३, अंक ३३, जनवरी 2018

शिक्षा- विमर्श

व्यक्तित्व निर्माण में मूल्य शिक्षा – एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

डॉ.उषासिंह, प्राध्यापक
शास.कन्या. महा.टीकमगढ (म.प्र.)
एवं
एच.पी.सिंह., साहित्यकार
टीकमगढ (म.प्र.)

शोध प्रवधि –

शोध आलेख 'व्यक्तित्व' निर्माण में मूल्य शिक्षा – एक समाजशास्त्री अध्ययन' के उपक्रम में मूल्य और विभिन्न समाजों के समाजीकरण को आधार बनाकर मूल्य शिक्षा का निर्धारीकरण करने का प्रयास किया गया है इन समाजों में हिन्दू समाज, मुस्लिम, बौद्ध, जैन समाज एवं पाश्चात्य समाज के मूल्यों – समाजीकरण का प्रभाव, धार्मिक मान्यताओं को आधार बनाया गया है। इसलिये शोध आलेख के निष्कर्षों तक पहुँचने के लिये इस प्रकार के हुये कुछ अध्ययनों का तुलनात्मक अध्ययन कर कुछ मानव समाज के कुछ मूल तत्वों का निर्धारण किया गया कि किस प्रकार से मानव और मानव समाज पर पर्यावरण, धर्म, समाजीकरण, मान्यतायें, परम्पराओं एवं संस्कारों के आधार पर मूल्य निर्धारित होते है इस क्रम में अमेरिका के रोबिन बिलियम्स के समाजीकरण के अध्ययन के साथ–साथ प्रसिद्ध विचारक रेमंड के शिक्षा विकास की अवधारणाओं को भी शामिल किया गया इसके अतिरिक्त ओरनोल्ड एण्डरसन के शिक्षा के विभिन्न दृष्टिकोणों एवं महत्व, लिमार्क के जिराफों पर पर्यावरण का अध्ययन, लोम्प्रोसो का अपराध और व्यक्तित्व संरचना का आपसी अंर्तसंबंध एवं फ्राइड के विकासवादी सिद्धांत को तुलनात्मक अध्ययन के रुप में शामिल कर निष्कर्ष प्राप्त किये गये।

Jankriti International Magazine
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 2.0202
www.jankritipatrika.in
Volume 3, Issue 33, January 2018

जनकृति अंतराराष्ट्रीय पत्रिका
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 2.0202
www.jankritipatrika.in
वर्ष ३, अंक ३३, जनवरी २०१८

मूल्य तथा आदर्श नियम समाजशास्त्र की महत्वपूर्ण अवधारणायें मानी जाती है इनका संबंध समाज स्वीकृति उन नियमों से है जिनका पालन अधिकांश व्यक्ति करते है तथा जिनके अनुसार व्यवहार न करना अनुचित माना जाता है, इन्हीं से हमें उचित अनुचित का बोध होता है व्यक्ति जन्म के बाद से इन आदर्शों नियमों और मूल्यों को सीखता है ये मूल्य किसी भी समाज में शिक्षा के महत्वपूर्ण आधार हैं जिनके माध्यम से समाज, व्यक्ति और संस्कृति का अनुमान लगाया जाता है।

संस्कृति की भांति मूल्य भी सभी समाजों में अलग–अलग होते हैं पाश्चात्य समाज, जनजाति समाज, भारतीय समाज, मुस्लिम समाज, जैन समाज, बौद्ध समाज सभी में आदर्श नियम और मूल्यों के स्वरुप अलग–अलग हैं।

रोबिन विलियम्स ने – अमेरिका के मौलिक मूल्यों का अध्ययन किया जिसमें उपलब्धि एवं सफलता, कार्य, कार्यकुशलता एवं व्यवहारिकता, भौतिक सुख, राष्ट्रीयता, समता तथा भाग्य पर, विज्ञान एवं तर्क के आधिपत्य को सम्मिलित किया, यदि भारतीय संस्कृति और भारतीय समाज के संदर्भ में इन मूल्यों को ढूंढ़ने का प्रयास करें तो अधिकांश मूल्य हमारी संस्कृति में नहीं है। इससे स्पष्ट है कि प्रत्येक समाज में मूल्य एवं आदर्श नियम अलग–अलग होते है जिसके आधार पर सामाजीकरण की प्रक्रिया के दौरान व्यक्ति शिक्षा प्राप्त करता है और समाजीकरण के मूल्य भी हर समाज में अलग–अलग स्थापित होते हैं।

इसीलिये कहा गया है – मूल्य चयन के पैमाने, सांस्कृतिक उपज, मानसिक धारणायें है, जिनका सामाजीकरण की प्रक्रिया के द्वारा अंतरीकरण होता है।

मूल्य और शिक्षा 'सीख की प्रक्रिया' है जो ज्ञान, विज्ञान का आधार है जिसमें नैतिकता, धर्म, परम्परायें, प्रथायें तथा सांस्कृतिक तत्वों का समावेश है। यह वह आधार है जिसमें प्राचीनता और नवीनता का समावेश है।

Jankriti International Magazine
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 2.0202
www.jankritipatrika.in
Volume 3, Issue 33, January 2018

जनकृति अंतराराष्ट्रीय पत्रिका
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 2.0202
www.jankritipatrika.in
वर्ष ३, अंक ३३, जनवरी २०१८

भारत में शिक्षा का इतिहास, बहुत प्राचीन है तब शिक्षा का आधार लोककथायें और धार्मिक उपदेश थे जिसमें नैतिक शिक्षा, आध्यात्मिक शिक्षा, शस्त्र विद्या शिक्षा, समाज व्यवस्था में आदर्शों की स्थापना, न्याय व्यवस्था, दण्ड व्यवस्था, जीवन जीने के व्यवहारिक तरीके आदि के रुप में शिक्षा व्याप्त थी, और वर्तमान समाज में समाज की जटिलता के आधार पर शिक्षा औपचारिक रुप में, परिभाषित हो गई जिसके अंतर्गत शिक्षा विज्ञान, तकनीकी शिक्षा, चिकित्सा शिक्षा, प्रोद्योगिकी शिक्षा, विभिन्न विद्यालयों, महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों द्वारा सैद्धांतिक शिक्षा संचालित हो रही है।

इसलिये कहा जा सकता है कि शिक्षा एक व्यापक अवधारणा है जिसका प्रभाव व्यक्ति, व्यक्तित्व और समाज पर सीधा–सीधा पड़ता है जन्म के समय एक बालक, शरीर से तो बालक होता है किन्तु उसके पास न संस्कृति होती है, न भाषा होती है, न मूल्यों, आदर्शों का ज्ञान होता है वह संपूर्ण तब बनता है जब वह शिक्षित होता है, यह शिक्षा समाजीकरण के द्वारा प्राप्त कर, समाज के नियमों से, आदर्शों से परिचित होता है और अपने व्यक्तित्व का निर्माण करता है।

थॉमसन ने कहा है – शिक्षा बाहरी बातावरण के प्रभावों को समन्वित रुप है जिसके द्वारा मनुष्य के आचार–विचारों, आदतों तथा व्यवहारों में सुधार होता है अथवा जिसके द्वारा मनुष्य में उत्तम गुणों का विकास होता है इसीलिये व्यक्तित्व और शिक्षा एक दूसरे के पूरक है।

व्यक्तित्व शब्द अंग्रेजी भाषा के परसनलिटि शब्द का हिन्दी रुपांतरण है जिसका अर्थ होता है नकाब इस अर्थ में व्यक्तित्व में व्यक्ति का बाहरी एवं आंतरिक ढाँचा शामिल है।

बाहरी तौर पर व्यक्तित्व के अंतर्गत रुप, रंग, लंबाई – चौड़ाई, सुंदरता, कुरुपता, भूमिकायें एवं पद आते है और आंतरिक तौर पर व्यक्तित्व के अंतर्गत बुद्धि, योग्यता, अर्जित गुण, उपलब्धियां शामिल है।

Jankriti International Magazine
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 2.0202
www.jankritipatrika.in
Volume 3, Issue 33, January 2018
जनकृति अंतराराष्ट्रीय पत्रिका
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 2.0202
www.jankritipatrika.in
वर्ष ३, अंक ३३, जनवरी २०१८

इस अर्थ में व्यक्तित्व बाहरी और आंतरिक संरचना का मिलाजुला स्वरुप है जिसका विकास वंशानुगत तौर और शिक्षा तथा सामाजिक नियमों के आधार पर होता है इसीलिये शिक्षा और व्यक्तित्व का आत्मिक, बौद्धिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक विकास होता है।

रेमंड ने कहा था – शिक्षा विकास की एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें मनुष्य बचपन से प्रौढ़ावस्था तक अनेक तरीकों से अपने भौतिक सामाजिक तथा आध्यात्मिक पर्यावरण से अनुकूलन करना सीखता है और व्यक्तित्व का निर्माण करता है। इस संबंध में प्रसिद्ध समाजशास्त्री दुर्खीम ने अपनी पुस्तक म्कनबंजपवद ंदक ैवबपवसवहल में, आरनोल्ड एण्डरसन ने अपने पुस्तक म्बवदवउल ंदक ेवबपमजल आदि में शिक्षा के विभिन्न दृष्टिकोणों एवं महत्व को परिभाषित किया है। सामान्य अर्थों मे शिक्षा का तात्पर्य साक्षरता तथा पुस्तकीय ज्ञान से समझा जाता है, जिसका संबंध ज्ञान के संग्रह उसके रचनात्मक उपयोग से होता है उसकी यह रचनात्मक आदर्श नियम, परम्परायें प्रथायें, रुढ़ियां, संस्कृति, मूल्य, जनरीतियों आदि के माध्यम से विकसित होती है व्यक्तित्व संस्कृति के आधार पर निर्मित होता है क्योंकि आदर्श नियम समाज में रीढ की हडडी की तरह होते है, ये समाज और व्यक्ति के पैमाने हैं जिनके द्वारा व्यक्ति और समूह के व्यवहार एवं क्रियाओं पर नियंत्रण रखकर उन्हें उचित अनुचित बोध कराया जाता है और व्यक्तित्व का निर्माण किया जाता है क्योंकि मनुष्य का संपूर्ण व्यक्तित्व, सामाजिक जीवन और पर्यावरण पर आधारित रहता है।

प्रसिद्ध विद्वान लिमार्क ने अपने सिद्धांत में जिराफों का अध्ययन किया और बताया कि चाहे जीवजंतु हो, प्राणी हो, सभी के व्यक्तित्व पर पर्यावरण का सामाजिक जीवन पर प्रभाव पड़ता है इन्होंने अफ्रीका के जंगलों में रहने वाले जिराफों का अध्ययन किया और पाया कि पहले जिराफ की गर्दन लम्बी नहीं थी, छोटी थी किन्तु जिन जंगलों में वे रहते थे वहाँ के पेड़ बहुत ऊँचे थे, इसलिये ऊँचे पेड़ों की पत्तियाँ खाने एवं

Jankriti International Magazine
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 2.0202
www.jankritipatrika.in
Volume 3, Issue 33, January 2018

जनकृति अंतराराष्ट्रीय पत्रिका
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 2.0202
www.jankritipatrika.in
वर्ष ३, अंक ३३, जनवरी २०१८

भोजन प्राप्त करने के लिये ऊँचाई पर उछलकर भोजन प्राप्त करना पड़ता है लगातार उछलने के कारण उनकी छोटी गर्दन स्थायी तौर पर लम्बी हो गई और उनकी शारीरिक संरचना बदल गई।

इसी प्रकार लोम्प्रोसो ने अपराधशास्त्र में पहली बार व्यक्तित्व संरचना का अध्ययन किया जिसमें उन्होंने 383 खोपड़ियों का मस्तिष्क, बाल, नाक, कान, भोहें, शरीर की झुर्रियां आदि का वैज्ञानिक अध्ययन किया और बताया कि समाज, सामाजिक, पारिवारिक परिस्थितियों एवं सांस्कृतिक पर्यावरण का व्यक्तित्व की बाहरी, संरचना के साथ–साथ आंतरिक संरचना पर भी विशेष प्रभाव पड़ता है।

प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक मानसिक परीक्षा संबंधी संप्रदाय एवं मनोविश्लेषलात्मक संप्रदाय के प्रवर्तक एवं फ्रायड की विचारधारा भी यह सिद्ध करती है कि व्यक्तित्व की आंतरिक संरचना यथा मानसिक दुर्बलता, भावनात्मक तनाव, मनोवैज्ञानिक अपराध, प्रवृत्ति, आदि का संबंध भी व्यक्तित्व और शिक्षा से है, क्योंकि समाज और संस्कृति के नियमों के आधार पर व्यक्ति अपने कार्यों का संचालन करता है तभी व्यक्तित्व का विकास सुचारु रुप से मान्य होता है जबकि आदर्शों नियमों के विरुद्ध कार्य यदि किया जाता है तब व्यक्ति शारीरिक और मानसिक रुप से अपराधी घोषित हो जाता है।

इसीलिये कहा गया है कि मूल्य व्यक्तियों को अपनी इच्छा, आकांक्षाओं, उद्देश्यों को वास्तविकता प्रदान करने के आधार है जिनसे व्यक्तित्व का निर्माण एक महापुरुष, वैज्ञानिक, शिक्षक, लेखक, गायक, चित्रकार, एवं अपराधी किसी भी रुप में होता है। इसीलिये मूल्य परख शिक्षा, नियमानुसार, सैद्धांतिक एवं व्यवहारिक शिक्षा व्यक्तित्व निर्माण का आधार है जिसमें शिक्षक की विशेष भूमिका होती है।

अतः शिक्षा और व्यक्तित्व एक दूसरे के पूरक अवधारणा है और वर्तमान समय में सामाजिक विकृतियाँ बढ़ गई है तब ऐसे समय में मूल्य परक शिक्षा का महत्व वास्तव में बढ़ गया है मूल्य परक शिक्षा

Jankriti International Magazine
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 2.0202
www.jankritipatrika.in
Volume 3, Issue 33, January 2018

जनकृति अंतराराष्ट्रीय पत्रिका
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 2.0202
www.jankritipatrika.in
वर्ष ३, अंक ३३, जनवरी 2018

सामाजिक अनुशासन के लिये एक महत्वपूर्ण उपादान साबित होगी।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. मूलभूत समाजशास्त्रीय अवधारणायें एवं भारतीय समाज – लेखक – डॉ.धर्मवीर महाजन एवं डॉ.कमलेश महाजन पृ. 161 – 169 तक
2. अपराध शास्त्र – लेखक – डॉ.डी.एस.बघेल पृ. 121 – 131 तक
3. समाजशास्त्र की अवधारणायें एवं भारतीय समाज – लेखक – आर.बी.ताम्रकार पृ. 91 – 95
4. एजुकेशन एण्ड सोसियोलॉजी – लेखक – दुर्खीम
5. एजुकेशन, एकोनॉमी एण्ड सोसायटी – लेखक – आरनोल्ड एण्डरसन